28-2-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

ऐसे भी कोई पूछतें है कि सबसें ऊच तें ऊच कौन है? तो कहते है ऊच तें ऊच भगवान है। परें तें परें कौन है? तो भी कहेंगें भगवान। पतित पावन कौन? कहेंगें भगवान है। बाप बच्चों को ज जरूर वसी ही देंगें। यह है सब कामन बातें। बाप जरूर सबको साथ भी लें जावेंगें। आत्मायें सभी मुक्तिधाम में रहनें वाली है। चाहतें है भगवान आवें। जरूर दुःख है नां। बाप आते है सबको सुख शान्ती देंनें। शान्ती तो सब चाहितें है। कोई-2 थोड़ें में भी समझ जाते है। कोई सें तो कितना भी माथा मारों समझतें नही है। ड्रामा प्लान अनुसार गीता के भगवान नें गाली तो खाई है नां। तुम सिध कर सकते हो कृष्ण नही शिव है। परन्तु शिव को ऐसे गाली नही देंगें। गाली फिर ब्रह्मा को देते है। ईश्वर सर्वव्यापी है। यह समझते नही कि गाली देंते है। यह है भक्ति मार्ग का उल्टा ज्ञान। बाप आकर मुक्ति धाम में तो लें जावेंगें नां। और फिर राजयोग भी सिखाते है। तुम जीवनमुक्ति में जाते हो। मुक्ति ही तो मांगतें है नां। पापों का बोझा जो सिर पर है तो हिसाब किताब चुक्तु कर सब चलें जावेंगें। समझाया है, नालेज को समझ कर कुछ ऊच पद पालों। आगें चल कर बच्चों को देखना है। अभी तो समय पड़ा है। नालेज तो सबको ही मिलनी चाहिये नां। सबको ही पता पड़ेगा। परन्तु समय ही नही रहता है फिर पुरूषार्थ करने का। समझेंगें भी। फिर भी इतनी दूर-2 सें आ थोड़ेई सकेंगें। घर कें अल्लाह को याद करेंगें। सों तो ऐसे ही भी याद करते रहते है। मजा है तो बच्चों को। तुम कहते हो भगवानोवाच्य। राजयोग सिखा कर राजयोग प्राप्त कराता हूं। तुम बच्चें रिजल्ट तो देखतें ही हो। ऐम आबजेक्ट सामनें है। बाकी मतमतान्तर तो बहुत ही है। उनका भी दोष नही है। यह बना बनाया नाटक है। हम समझते है यह सब ऐक्टर्स है। निन्दा तो कोई की कर नही सकते है। नाटक की तो जरूर ही महिमा करनी पड़ें। अपना ही यह नाटक है। हम इस नाटक के ऐक्टर्स है। ऐक्टर्स नाटक को खराब थोड़ेई मानेंगें। इनको तो देख कर हम खुश होते है। हम निन्दा कर नही सकते है। माया की जेल सें छुड़ानें के लिये यह सब ज्ञाते है। बाप बिना कोई और छुड़वा नही सकते है। रावण राज्य सें बाप ही छुड़ावेंगें। भागीरथ नाम भी है नां। कहते है भागीरथ नें गंगा लाई। वो कैसे लावेंगे? तुम तो हो ज्ञान गंगायें। पतित पावन भी तुम हो नां। तुम पतितों को पावन बनाते हो। तुम गंगायें सागर सें निकली हो। सबकें साथ सागर तो बात नही करते है। सागर सें निकल कैसे होता है, यह भी जब कोई समझे। फिर भी मेहनत है। देहअभिमान टूटता ही नही। समय लेता है। तुम बच्चें खुद भी जानते हो कर्मातीत अवस्था को पाना मुश्किल है। कर्मातीत अवस्था जब हो जावेगी फिर तो रह नही सकेंगें। कोई भी कुछ भी हो शिव बाबा तो जिन्दा है नां। उनका तो डायरेक्शन बुधी में है ही कि शिव बाबा को ही याद करना है। बाप हो नां हो। बाप के लिये भी कुछ कह नही सकते है। पावन तो तुम ज्ञान गंगाओं को बनना है नां। कुछ भी हो जावें तुम्हारा तो धन्धा चलेंगा नां। तुम सेन्टर्स बन्द नही कर सकते हो कुछ भी हो जावें। तुम बच्चों का काम ही है यही धन्धा करना और शिव बाबा की याद की यात्रा पर ही रहना। बाकी शिव बाबा एक मुकरर रथ तो ब्रह्मा ही है। तुम ब्राह्मण हो। तुम कह सकते हो बाप बच्चों दवारा करायें रहे है। बाप कोई में भी प्रवेश कर पढा सकते है। शिव बाबा नें किसें में प्रवेश किया? बुढ्ढें वां ब्राह्मण में। बुढ्ढ में ही प्रवेश करना पड़ता है। उस समय वर्ष तो बुढ्ढ होता है नां। प्रवेश कर फिर नाम बदलते है। ऐडापट किया है। तो यह बातें शास्त्रों की और शास्त्रों में नां होंने कारण मूंझते है। ब्रह्मा माना ही ब्राह्मण। ब्राह्मण फिर बनते है फरिशता फिर बनते है देवता। तुम सब फरिशता बनते हो। फिर देवता बनते हो। फरिशता नाम भी है नां। सुक्ष्म वतनवासी फरिशता है। जगदम्बा ब्राह्मणी है फिर फरिशता बनी है फिर देवता बनेंगी। ओम

सूचनाः- कोई भी रजिस्ट्री की मोहर भेजतें है तो ये सिर्फ 10 नये पैसे के अन्दर आ सकती है

[illegible]